RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

21वीं सदी में भारत – चीन सम्बन्ध

विजय शंकर चौधरी
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग गोवा विश्वविद्यालय, गोवा

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 25 May 2019

Keywords
सीमा विवाद, निर्माण कार्य, निवेश, विस्तार वादी, महत्वकांक्षा, संघर्ष।

ABSTRACT

भारत- चीन संबंध प्राचीन काल से ही रहे हैं। इन दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं आर्थिक संबंधों की लंबी श्रृंखला रही है। आज दोनों बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देश बन चुके हैं और दोनों एक दूसरे के पूरक भी हो गये हैं। 1959 में तिब्बत पर चीनी आक्रमण के बाद दोनों के बीच कटुता पैदा हो गयी जो 1962 में भारत पर चीनी आक्रमण के बाद पराकाष्ठा पर पहुंच गई। इतना ही नहीं, चीन ने पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश, नेपाल आदि देशों के साथ विशेष संबंध बनाकर भारत को घेरने की नीति अपना ली। सारे विवादों की शुरुआत वस्तुतः दोनों देशों के बीच सीमा के प्रश्न पर शुरू हुई और आज कई अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर भी दोनों में विवाद रहे हैं। चीन की विस्तारवादी नीति दोनों के बीच खटास का एक मुख्य कारण है। भारत की बढ़ती आर्थिक, सामरिक शक्ति चीन की आंखों में गर रही है।

फलतः आतंकवाद, कोरोना एवं दक्षिण एशिया समुद्र जैसे मामलों पर चीन ने भारत विरोधी रुख अख्तियार कर लिया है। जब तक चीन अपनी नीति और नीयत में परिवर्तन नहीं करता तब तक दोनों के बीच मित्रता का होना संभव नहीं होगा।

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश है जो अपनी जनसंख्या के मामले में दुनिया में चीन के बाद दूसरे स्थान पर है। भारत- चीन सम्बन्ध हमें प्राचीन काल से ही देखे जाते रहे हैं। भारत- चीन के बीच में सम्बन्ध विश्व में अद्वितीय है, क्योंकि ये दोनों देश लगातार प्राचीन परम्पराओं एवं सभ्यताओं के साथ जुड़े रहे हैं। इन दोनों देशों के सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और आर्थिक सम्बंधों की लम्बी श्रृंखला देखने को मिलता है। इन दोनों देशो ने एक ही समय में अपने राजनीतिक इतिहास का नया चरण शुरू किया। आज ये दोनों देश दुनिया की बड़े अर्थव्यस्था वाले देश बन चुके हैं। जिससे इन दोनों देशों के बीच में एक दूसरे के पूरक की तरह सम्बन्ध बन चुके हैं और बहुत बड़े पैमाने पर ये अभूतपूर्व गति से अपने लोगों के सामाजिक - आर्थिक परिवर्तन की प्रक्रिया में लगे हैं। साथ ही विशाल भौगोलिक क्षेत्र रखते हुए दोनो के सम्बन्धों में उतार - चढ़ाव देखने को मिलाता रहता है। हाल के समय में ही दिपक्षीय सम्बन्ध विकास और विविधता की प्रक्रिया से गुजरते हुए गतिमान रहे हैं। यह सम्बन्ध आम तौर पर पारस्परिक सामाजिक हितों के सहयोग में वृद्धि और साथ ही साथ मतभेद के समाधान पर केन्द्रित दिखाई देता रहा है। वही दूसरी तरफ देखा जाये तो पडोसी देश होने के कारण ही दोनों के बीच काफी विवाद के बिन्दु भी दिखाई पड़ते है। कहने का आशय यही है कि भारत –चीन सम्बन्धों में सहयोग एवं तनाव का अदभुत मिश्रण दिखाई देता हैं। भारत - चीन सम्बंधों में सहयोग के साथ – साथ विवाद, भी प्रबल होते है, जिससे सम्बंधों में एक संक्रमण कालीन उतार – चढाव का दौर दिखाई पड़ता है।

1959 में चीन का तिब्बत पर आक्रमण एवं दलाईलामा को भारत द्वारा शरण देना न केवल ऐतिहासिक रूप से दोनों के बीच कटुता का कारण रहा है, बल्कि वर्त्तमान समय में भी यह बहुत बड़ा तनाव का कारण है। यह भी कहा जाता है कि चीन का 1962 में भारत पर आक्रमण का एक प्रमुख कारण दलाईलामा को भारत द्वारा शरण दिया जाना था। 1962 के चीन आक्रमण से भारत – चीन सम्बंधों में संदेह एवं अविश्वास का वातावरण बन गया था। ऐतिहासिक अविश्वास के अलावा वर्तमान में भी कई मुद्दों ने भी दोनों के मध्य अविश्वास को बढाया दिया है। वर्ष 1988 की राजीव गाँधी की यात्रा से सीमा विवाद के सन्दर्भ में, भारतीय भारतीय दृष्टिकोण में परिवर्तन दिखाई देने लगा था । इस तरह भारत के जो भी जो भी प्रधानमंत्री बने सभी ने सीमा पर शांति व्यवस्था बनाये रखने का पूरा प्रयास किया। चीन ने कश्मीर के मूल निवासियों को तथा अरुणाचल प्रदेश के नागरिकों को वीजा अलग से देना प्रारम्भ किया, साथ ही साथ बीच – बीच में भारतीय अधिकारीयों (जो अरुणाचल प्रदेश में कार्यरत हैं) को चीन का वीजा देने से इंकार कर देता है। उसका कहना है कि अरुणाचल प्रदेश तो चीन का ही भाग है, फिर वीजा क्यों? चीन ने पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में जल विद्युत परियोजनाओं में निवेश तथा काराकोरम हाइवे आधुनिकीकरण का भी पाकिस्तान को वादा किया है। साथ ही चीन

RRIJM 2015, All Rights Reserved

ने भारत विकास योजना के लिए 2.9 अरब डालर के एशियाई विकास बैंक के ऋण को बाधित करने का प्रयास किया क्योंकि इसमें 60 मिलियन डालर अरुणाचल प्रदेश में वाटरशेड डेवलपमेंट प्रोजेक्ट के लिए भी था। इसी तरह चीन ने नेपाल में निर्माण सम्बन्धी कार्य कर दिया है, जिससे भारत को अपने सीमावर्ती क्षेत्रों में सड़क निर्माण आदि कार्यों में बाधा हो रही है। उसने काराकोरम लिपुलेख जैसे सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सड़कों एवं हवाई अड्डों का निर्माण किया हैं। चीन ने अरुणाचल प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उतराखंड, सिक्किम, लद्दाख आदि सभी क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय सीमा तक अपनी सैन्य पहुँच सड़के, रेलमागो हवाई अड्डों को विकसित करने का कार्य किया है।

21 वीं सदी में भारत और चीन के सम्बंधों में बहुत ज्यादा गतिशीलता देखने को मिलाती रही है। वर्ष 2003 में भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने चीन का दौरा किया, दोनों देशों के राष्ट्रध्यक्षों ने विभिन्न पक्षों पर बात चीत की. दोनों ने भारत- चीन सम्बंधों में सिद्वान्तों और व्यापक सहयोग पर घोषणा (The Declaration on The Principles and Comprehensive Cooperation in China - india Relation) पर हस्ताक्षर किये. इसी के अगले पायदान पर दोनों देशों के सम्बन्ध मधुर प्रतीत हुए। वर्ष 2011 को 'चीन - भारत विनिमय वर्ष' तथा वर्ष 2012 को चीन - भारत मैत्री एवं सहयोग के रूप में यह वर्ष के रूप में मनाया गया। वर्ष 2015 में भारतीय प्रधानमंत्री ने चीन का दौरा किया. इसके बाद चीन ने भारतीय आधिकारिक तीर्थयात्रियों के लिए नाथूला दर्रा खोलने का फैसला किया। भारत ने चीन में भारत पर्यटन वर्ष मनाया। भारत चीन सम्बंधों में एक नयी पहचान बनाने की एक नयी पहल थी जिसके बाद वर्ष 2018 में चीन के राष्ट्रपति तथा भारतीय प्रधानमंत्री के बीच बुहान में 'भारत - चीन अनौपचारिक शिखर सम्मलेन' का आयोजन किया गया। उनके बीच गहन विचार विमर्श हुआ, वैश्विक और द्विपक्षीय रणनीतिक मुद्दों के साथ – साथ घरेलू एवं विदेशी नीतियों के लिए सबन्धित दृष्टिकोण पर व्यापक सहमति बनी। वर्ष 2019 में भारतीय प्रधानमंत्री तथा चीन के राष्टपति के बीच चेन्नई में दूसरा अनौपचारिक शिखर सम्मलेन, आयोजित किया गया। इस बैठक में प्रथम अनौपचारिक सम्मलेन में बनी आम सहमति को और अधिक दृढ़ किये जाने का प्रयास किया गया। इस तरह वर्ष 2020 में भारत और चीन के बीच राजनीयिक सम्बंधों की स्थापना की 70वीं वर्षगाठ है तथा भारत- चीन सांस्कृतिक तथा पीपल - टू - पीपल संपर्क का वर्ष भी मनाया जा रहा है। पिपूल - टू - पिपूल कनेक्ट से दोनों देशों ने कला, प्रकाशन, मीडिया, फ़िल्म और टेलीविजन, संग्रहालय खेल, युवा, पर्यटन, स्थानीयता, पारंपरिक चिकित्सा, योग शिक्षा तथा थिंक टैंक के क्षेत्र में आदान प्रदान तथा सहयोग पर बहुत अधिक प्रगति की है। दोनों देशों ने सिस्टर सिटिज तथा प्रान्तों के 14 जोड़े स्थापित करने का प्रस्ताव किया। फुजियान प्रान्त और तमिलनाडू को सिस्टर स्टेट के रूप में, जबकि चिनाझोऊ एवं चेन्नई नगर को सिस्टर सिटिज के रूप में विकसित किया जायेगा। भारत - चीन के बीच 21वीं सदी के सम्बंधों में विवाद भी हमें प्राय देखने को मिला सीमा विवाद जैसे – पेंगोंगत्सो मोरीरी झील आदि। शीतयुद्वोत्तर विश्व में भारत और चीन के बीच मधुर सम्बन्ध होने के बाद भी कुछ विद्वानों की मान्यता है कि चीन सदैव भारत के लिए एक प्रमुख खतरा है, जिससे भारत को सतर्क रहने की आवश्यकता है। सीमा विवाद के संदर्भ में यह मान्यता सत्य प्रतीत होती है, कि भारत और चीन के मध्य समूची 4,057 किमी की सीमा रेखा का अभी भी सीमांकन नहीं किया गया है। लेकिन चीन के सैनिकों द्वारा बीच – बीच में घुसपैठिये रणनीति के परिणामस्वरूप दोनों देशों की सीमाओं पर अशांति का वातावरण उत्पन्न किया गया है, भारत व चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार में भारत को 35 बिलियन डालर का व्यापारिक नुकसान हुआ है। जिसे दूर करने के लिए भारत में चीनी निवेश को बढ़ाने की मांग की जा रही है, एवं भारतीय वस्तुओं के चीनी बाजारों में बेहतर पहुँच की मांग की जा रही है। भारत की विप्रो जैसी कंपनी ने चीनी बाजार में अपनी प्रभावी उपस्तिथि दर्ज की है। भारत व चीन के बीच व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ रहे हैं। परन्तु व्यापारिक सम्बंधों के बढ़ने के साथ - साथ सीमा विवाद के मुद्दे पर चीन का दृष्टिकोण सख्त होता जा रहा है और व्यापारिक क्षेत्र में चीन - भारत को छूट देने को तैयार है, परन्तु वह सीमा मुद्दे पर वह किसी प्रकार का छूट देने को तैयार नही है। इसलिए दोनों देशों के बीच बढ़ते व्यापारिक सम्बन्ध सहयोग का आधार निर्मित करेंगे। भारत- चीन के मध्य भौगोलिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध विद्यमान है। चीन यात्री ह्वेनसांग और फाहियान ने भारतीय सभ्यता और सांस्कृति की खोज के लिए भारत की यात्रा की थी। दोनों देशो एशिया की दो महाशक्तियां के रूप में वैश्विक पटल पर अपनी पहचान है। भारतीय प्रधान मंत्री नेहरू ने एशियाई - अफ्रीकी एकता को शक्तिशाली बनाने के लिए चीन के साथ मित्रतापूर्ण सम्बंधों पर प्रभावी बल दिया था। भारत चीन से अपने सम्बन्धो को मजबूत करने के लिए सदैव प्रयास करता रहा है। भारत - चीन से अपने सीमा सम्बन्धीय विवाद को भी सुलझाने का लगातार प्रयास करता रहा है, लेकिन चीन सकारात्मक पहल करने के बजाय भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका के माध्यम से उसे घेरने की नीति को अधिक महत्व देता रहा है। इसलिये आये दिन भारत चीन सेना की सीमा पर आपसी विवाद की खबर आती रहती है।

21वीं सदी में चीन का एक महाशक्ति के रूप में उदय विश्व राजनीति की एक महत्वपूर्ण घटना है तथा भारतीय विदेश नीति पर इसका दीर्घकालिक प्रभाव देखा जा सकता है। चीन की विदेश नीति में विस्तारवादी महत्वकांक्षा सदैव विद्यमान रही है। चीन आर्थिक

समृद्वि परिणाम स्वरूप तेजी से अपना सैन्य-आधुनिकीकरण कर रहा है। वर्तमान समय में चीन का रक्षा खर्च अमेरिका के पश्चात् विश्व में सर्वाधिक है। भारतीय विदेश नीति के लिए चीन के साथ सम्बंधों को बनाये रखना सबसे जटिल चुनौती प्रतीत होता हुआ दिखाई दे रहा है। चीन के साथ बेहतर सम्बन्धों को निर्मित करते हुए भारत को अपनी सामरिक क्षमता में निर्णायक वृद्वि करनी होगी। शीतयुद्वोत्तर विश्व में भारत दुनिया के 10 बड़े बाजारों में से एक है। इसलिये चीन ने भारत के प्रति अपनी नीति का पुंविलोकन किया है तथा भारत ने भी यथार्थावादी दृष्टिकोण अपनाते हुए सीमा विवाद होने के बावजूद चीन के साथ अन्य क्षेंत्रों में सुधार पर बल प्रदान किया है। विश्व परिदृश्य के बदलते परिवेश में भारत एवं चीन सम्बंधों में नए प्रकार का परिवर्तन दिखाई पड़ रहा है, जो न केवल सीमा पर बल्कि अलग - अलग जगहों पर जैसे कि विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के सुरक्षा परिषद् आदि में यह परिलक्षित हो रहा है। चीन एक महाशक्ति बनकर उभर रहा है। और अमेरिका संकुचित हो रहा है। जिसे चीन से व्यापाक चुनौती मिली है। आज वैश्विक परिदृश्य में कोरोना महामारी के दौरान चीन की नीतियाँ जिस प्रकार की रही है वह यह चर्चा का विषय नहीं बल्कि वास्तविकता का हिस्सा है। चीन के इस प्रकार के अभ्युदय से बहुमुखी एवं बहुकेंद्रीय शक्तियों का उभर हुआ है जिसके परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्र संघ की शक्ति कम हुई है। चीन के विरूद्व करोनो के लिए उसकी जिम्मेदारी पर संयुक्त राष्ट्र संघ एक भी वक्तव्य नहीं दे सका। जी-7 और जी -20 जैसे समूह देशों को भी चीन ने दबाव में डाल रखा है जिससे वे किसी भी प्रकार से उसका नाम इस महामारी के लिए नहीं ले पाए। अब भारत को इस संरचनात्मक परिवर्तन में अपना स्थान बनाना है और अपने बहुमुखी स्वभाव से भारत ने विश्व को प्रभावित किया एवं दुनिया में आशा की किरण जगाई। भारत ने अपने सभी पडोसी देशों को मिलकर इस महामारी से लड़ने का आह्ववान किया और इसकी शुरुआत सार्क के द्वारा किया है। जबकि चीन ने कोरोना महामारी की सही जानकारी विश्व को नहीं दी, और विश्व स्वास्थ्य संगठन को भी उपनें प्रभाव में रखने का प्रयास किया है। यहां तक कि उसने अपने पडोसी देशों के साथ सामरिक संघर्ष को भी बढ़ावा दिया है क्योंकि चीन में कम्यूनिस्ट पार्टी देश की ख़राब अर्थव्यवस्था से चीन के लोगों का ध्यान भटकाने की योजना कर रही है। यही कारण हैं कि चीन ने दक्षिण पूर्व सागर के देशों तथा भारत के साथ सीमा विवाद औए भारत के विरूद्व नेपाल को उकसाने का कार्य किया है। भारत ने चीन और नेपाल दोनों ही देशों को कड़ा जबाव दिया है कि दोनों देशों के बीच यह सामरिक मामला है, जिसे लम्बे समय तक बने रहने की संभावना व्यक्त की जा रही है। कुछ दिन पहले चीन ने लद्याख के गलवान घाटी पांगोंग त्सो (या पांगोंग झील, त्सो लद्याखी में झील) में घुसपैठीय तरीके से प्रवेश किया, जिससे दोनों देशों के बीच तनाव का परिवेश उत्पन्न हो गया। भारत अपनी जबरदस्त इच्छाशक्ति से इन सभी मुद्दों पर सकारात्मक रूप से परिवर्तन आया है तथा भारत एक विश्व परिदृश्य में एक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है।

निष्कर्ष :

भारत - चीन संबंधों में उतार-चढ़ाव को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि 21वीं सदी दोनों के बीच कड़वाहट का एक काल है। पूरे विश्व पर हावी होने की महत्वाकांक्षा ने चीन को भारत के विरुद्ध खड़ा होने को उत्साहित किया है। आर्थिक एवं व्यापारिक मामलों में दोनों देशों के बीच बढ़ते हुए विवाद एक ऐसे बिंदु पर पहुंच गए हैं कि निकट भविष्य में दोनों के बीच घनिष्टता की आशा एक सवप्न साबित होगी। चीन ने जिस तरह से भारत को घेरने की रणनीति बनाई है, उससे न केवल एशिया महादेश को एक धक्का लगेगा, बल्कि विश्व परिदृश्य पर भी एक नयी परिस्थिति पैदा होगी जो भारत- चीन संबंधों के लिए बाधक साबित जाएगी। अतएव दोनों देशों के बीच संबंधों में टकराहट आने वाले दिनों में और बढ़ेगी।

अंततः न केवल दोनों देशों के लिए ही यह नुकसानदेह होगा बल्कि विश्व शांति और सुरक्षा के लिए खतरनाक साबित हो सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ - सूची :

1. मिश्रा, राजेश. (2015). ***भूमण्डलीकरण के दौर में भारतीय विदेश नीति.*** सरस्वती IAS मुखर्जी नगर. दिल्ली.
2. बिस्वाल, तपन. (2016). ***अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध.*** ओरियंट ब्लैकस्वान. हैदराबाद.
3. कुमार, अजय. (2016). ***अंतर्राष्ट्रीय सम्बंधों के सिद्वांत एक परिचय.*** पियर्सन पब्लिकेशन, दिल्ली.
4. बाजपेयी, अरुणोदय. (2017). ***समकालीन विश्व एवं भारत प्रमुख मुद्दे और चुनतियां.*** पियर्सन पब्लिकेशन, दिल्ली.
5. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-editorials/the-hanging-nature-of-chinese-diplomacy